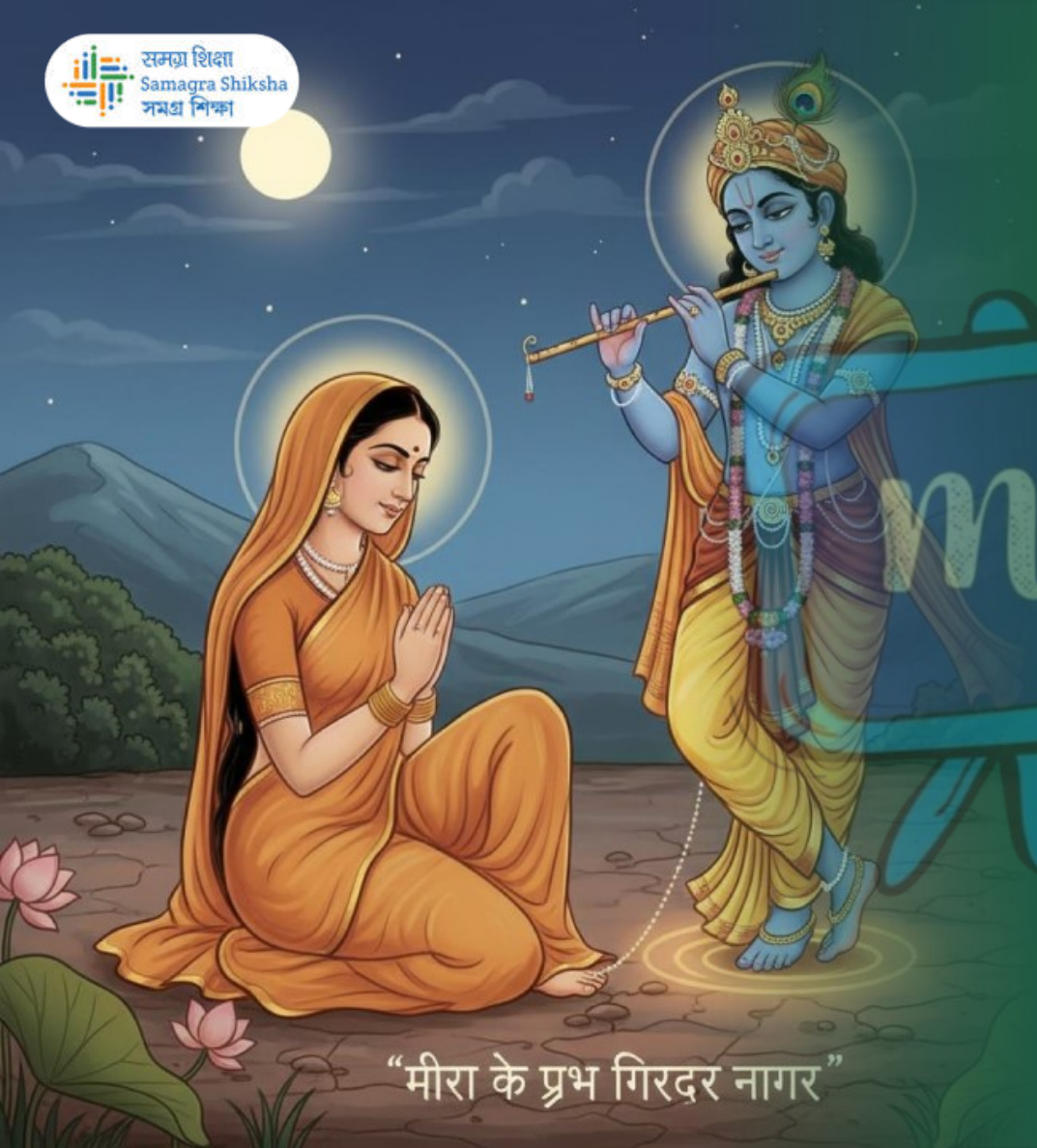

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 8

पद-त्रय

(मीराँबाई ((1498-1546))

भाग – 2

पल्लवी कलिता

4. संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :—

(क) प्रभु कृष्ण के चरण-कमलों पर अपने को न्योछावर करने वाली मीराँबाई ने अपने आराध्य से क्या-क्या निवेदन किया है ?

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :—

(क) प्रभु कृष्ण के चरण-कमलों पर अपने को न्योछावर करने वाली मीराँबाई ने अपने आराध्य से क्या-क्या निवेदन किया है ?

उत्तर : कवयित्री मीराँबाई ने अपने आराध्य प्रभु-कृष्ण से निवेदन किया है कि प्रभु कृष्ण उन पर कृपा करके दर्शन दे और उनकी सुध लें। मीराँबाई कहती है कि प्रभु ही उनकी आशा है और उनके बिना मीराँ का कोई दुसरा स्वामी नहीं हैं। अतः प्रभु कृष्ण आकर उनकी विरह-व्यथा को दूर करें और उनकी खबर ले।

(ख) सुंदर श्याम को अपने घर आने का आमंत्रण देते हुए कवयित्री ने उनसे क्या-क्या कहा है ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) सुंदर श्याम को अपने घर आने का आमंत्रण देते हुए कवयित्री ने उनसे क्या-क्या कहा है ?

उत्तर : सुंदर श्याम को अपने घर आमंत्रण देते हुए कवयित्री मीराँ ने कहा कि कृष्ण के विरह में वह पके पान की तरह पीली पड़ गयी है। उन्होंने और कहा कि कृष्ण के न आने के कारण वह बेहोश सी बैठी है। उनका ध्यान केवल कृष्ण पर ही है, किसी दूसरे की आशा नहीं हैं अत: वह (कृष्ण) तुरंत आकर उनसे मिले और उनकी मान की रक्षा कीजिए ।

(ग) मनुष्य मात्र से राम (कृष्ण) नाम का रस पीने का आह्वान करते हुए मीराँबाई ने उन्हें कौन-सा उपदेश दिया है ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) मनुष्य मात्र से राम (कृष्ण) नाम का रस पीने का आह्वान करते हुए मीराँबाई ने उन्हें कौन-सा उपदेश दिया है ?

उत्तर : मनुष्य मात्र से राम नाम का रस पीने का आह्वान करते हुए मीराँ ने सभी मनुष्य को कुसंग छोड़कर सतसंग में बैठने का उपदेश दिया है। उन्होंने सभी लोगों को अपने मन से काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह रूपी शत्रुओं को दूर हटाकर कृष्ण-प्रेम-रंग-रस में अपने को सराबोर कर लेने का भी उपदेश दिया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :—

(क) मीराँबाई के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालो ।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :—

(क) मीराँबाई के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालो ।

उत्तर : उत्तरः सन् 1498 के आस-पास प्राचीन राजपूताने के अंतर्गत "मेड़ता" प्रान्त के "कुड़की" नामक स्थान में मीराँबाई का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम था राव रत्नसिंह। बचपन में ही उनकी माता का देहांत हो गया । पिता को भी युद्धों में व्यस्त रहना पड़ा। इसलिए मीराँबाई की देखभाल करने का भार परम कृष्णभक्त दादाजी पर पड़ा।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उनके साथ रहने के कारण मीराँ के कोमल हृदय में कृष्ण-भक्ति का बीज अंकुरित होने लगा। मेवाड़ के महाराजा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह हुआ। पर सात वर्ष बाद वे विधवा हो गई। इसके बाद गिरधर गोपाल को ही अपना असली स्वामी मान लिया और पति के साथ सती नहीं हुई । लेकिन घर की ओर से उन्हें तरह तरह की यातनाएँ दी जाने लगी। अंत में मीराँ राजघराना छोड़कर साधु-संतों के साथ घूमते फिरते द्वारकाधाम पहुंची और वही सन् 1546 ई. के आस – पास वे भगवान की मूर्ति में सदा के लिए विलीन हो गई ।

(ख) पठित पदों के आधार पर मीराँबाई की भक्ति भावना का निरूपण करो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) पठित पदों के आधार पर मीराँबाई की भक्ति भावना का निरूपण करो।

उत्तर : सूरदास के बाद ही कृष्णभक्त कवियों में मीराँबाई का नाम परम श्रद्धा से लिया जाता है। उनकी पद या भजन भी सूरदास के समान लोकप्रिय है। वे कृष्ण को स्वामी, सखा, पति आदि रूपों में देखा करती है। मीराँ के अनुसार प्रभु गिरधर नागर, सुंदर श्याम राम आदि कृष्ण का ही अनेक नाम है जिनके दर्शन, कृपा और संग का वे अभिलाषी है। प्रभु कृष्ण के चरण कमलों में वे अपने को न्योछावर कर चुकी है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

पहले संसार को यह बात मालूम नहीं थी, पर अभी संसार को इस बात का पता चल गया। दूसरी ओर कृष्ण के प्रति मधुर भाव तथा तन्मयता, बेसुधी मे डूबा हुआ मीराँबाई का नारीहृदय कृष्ण के अतिरिक्त कहीं कुछ देखती ही नहीं। वे कृष्ण को तुरन्त घर आने का आमन्त्रण देते है और कहती है कि उनके विरह में वह पके पाण की तरह पीली पड़ गई है। अंत में मीराँबाई मनुष्य मात्र को प्रभु कृष्ण के प्रेम-रंग-रस से सराबोर हो जाने को कहा है।

इस प्रकार देखा जाता है कि मीराँबाई के पदों में प्रेम की व्याकुलता, आत्मसमर्पण, स्वाभाविक उल्लास, आदि का जीता-जागता चित्र है, जिसमें भक्ति भावना का प्रमुख केन्द्र कृष्ण मात्र ही है।



(ग) कवयित्री मीराँबाई का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) कवयित्री मीराँबाई का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।

उत्तर : 'कृष्ण प्रेम दीवानी' आख्या से विभूषित मीराँबाई ने कृष्ण भक्तिपरक अनेक पद लिखे हैं। महात्मा कबीरदास, सूरदास और तुलसीदास के भजनों की तरह "मीराँभजन" भी लोगों को अत्यन्त प्रिय रहे हैं। मीराँबाई द्वारा विरचित पुस्तकों में से सिर्फ फुटकर पदों को ही उनकी प्रामाणिक रचना मानी जाती है, जो "मीराँबाई की पदावली" नाम से प्रसिद्ध है।

उनके मन में आराध्य कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम, भक्ति, आत्मसमर्पण और साधना है ,जो अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अपनी रचनाओ में राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया है, इसमें ब्रज खड़ीबोली, पंजाबी , गुजराती आदि के शब्द मिलते हैं।

मीराँबाई के पदों और गीतों में अभिव्यक्त प्रेम माधुरी किसी को भी आकर्षित कर लेती है। इसके साथ उनकी सहज अभिव्यक्ति और सांगीतिक लय के मिलन से मीराँबाई के पद त्रिवेणी संगम के समान पावन और महत्वपूर्ण बन पड़े हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

6. सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) “मैं तो चरण लगी चरण-कमल बलिहार।"



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

6. सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) "मैं तो चरण लगी...चरण-कमल बलिहार।"

उत्तर : प्रसंग

यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक आलोक भाग-2 के अन्तर्गत कृष्ण-भक्त कवयित्री मीराँबाई द्वारा विरचित 'पद-त्रय' शीर्षक पद से लिया गया है। इसमें कवयित्री मीराँबाई के आराध्य प्रभु कृष्ण पर पूर्ण आत्मसमर्पण का भाव व्यंजित हुआ है।

व्याख्या

कवयित्री मीराँबाई के अनुसार वे गोपाल रूपी कृष्ण के चरण-कमलों में आ गयी है।

पहले यह बात किसी को मालूम नहीं थी, पर अब तो संसार को इस बात का पता चल गया है। अतः प्रभु गिरिधर उन पर कृपा करे, उन्हें दर्शन दे और शीघ्र उनकी खबर ले । मीराँ कहती है कि उन्होंने स्वयं को कृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया है ।

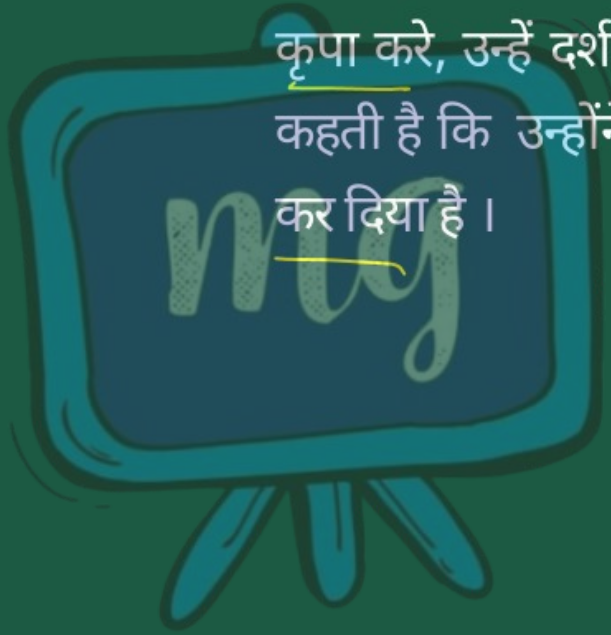

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख)"म्हारे घर आवौ.. राषो जी मेरे माण।"

उत्तर : प्रसंग

यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक भाग-2 ' के अन्तर्गत कृष्ण-भक्त कवयित्री मीराँबाई द्वारा विरचित 'पद-त्रय' शीर्षक से लिया गया है।

व्याख्या

इसमें कवयित्री मीराँबाई के कृष्ण प्रेम-विरह में व्यथित मन का एक जीता जागता चित्र अंकित हुआ है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सुंदर श्यामरूपी कृष्ण-दर्शन के अभिलाषी मीराँ कृष्ण को अपने घर आने का आमन्त्रण देकर कहती है कि वे कृष्ण के विरह में पके पाण की तरह पीली पड़ गयी है।

कृष्ण के दर्शन बिना वे सुध-बुध खो बैठी है। मीराँ फिर कहती है कि कृष्ण ही उनका एकमात्र ध्यान है, कृष्ण के अतिरिक्त कही कुछ देखती ही नहीं है। अतः वे तुरन्त आकर मीराँ से मिले और उनकी मान की रक्षा करे। इसमें प्रेम-की व्याकुलता, तन्मयता और स्वाभाविक उल्लास का एक सजीव चित्र हमें देखने को मिलता है।

(ग)“राम नाम रस पीजै ताहि के रंग में भीजै।"



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग)"राम नाम रस पीजै ताहि के रंग में भीजै।"

उत्तर : प्रसंग

यह पंक्तियाँ मीराँबाई द्वारा विरचित हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक भाग-2 के अन्तर्गत पद-त्रय शीर्षक के तृतीय पद से लिया गया है। इसमें मीरबाई ने प्रभु-कृष्ण के रंग-रूप ओर नामकीर्तन के महिमा का चित्र व्यंजित किया है।

व्याख्या

कवयित्री मीराँबाई ने मनुष्य मात्र को प्रभु-कृष्ण के प्रेम-रंग-रस से सराबोर हो जाने को कहा है ।

मीराँ के अनुसार सभी मनुष्यों को कुसंग छोड़कर सतसंग में बैठना चाहिए और अपने मन से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद रूपी शत्रुओं को भगाकर कृष्ण का नाम लेना चाहिए। इसमें मीराँ जी की कृष्ण-भक्ति की मधुर ध्वनि व्यंजित हो उठी है, जो मनुष्यों के हृदय में आनन्द उल्लास ला देती है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप बताओ :

किरपा, दरसन, आसा, चरचा, श्याम, धरम,

किशन, हरख

भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप बताओ :

किरपा	-	कृपा
दरसन	-	दर्शन
आसा	–	आशा
चरचा	-	चर्चा

भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप बताओ :

श्याम	-	श्याम
धरम	-	धर्म
किशन	-	कृष्ण
हरख	-	हर्ष

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. वाक्यों में प्रयोग करके निम्नलिखित लगभग समोच्चरित शब्द जोड़ों के अर्थ का अंतर स्पष्ट करो :

संसार-संचार, चरण- शरण, दिन-दीन,

कुल-कूल, कली-कलि, प्रसाद - प्रासाद,

अभिराम - अविराम, पवन-पावन

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उत्तर :

- संसार (जगत) : इस संसार के प्रत्येक प्राणी को एक दिन इसे छोड़कर जाना होगा।
- संचार (गमन) : हमारे पूरे शरीर में रक्त का संचार होता रहता है।
- चरण (पैर) : हमें अपने बड़ों के चरण छूकर आशीर्वाद लेना चाहिए।
- शरण (आश्रय) : ईश्वर सबके शरण दाता होते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

- दिन (दिवस): रविवार छुट्टी का दिन होता है।
- दीन (गरीब): हमें दीन-दुखियों की सहायता करनी चाहिए।
- कुल (खानदान): उसने अपने कुल का नाम रौशन कर दिया ।
- कूल (किनारा): नदी के कूल पर ही हमारा स्कूल है।
- कली (अंकुर): पौधे से कली को नहीं तोड़ना चाहिए।
- कलि (लड़ाई-झगड़ा): दोनों भाइयों के बीच जायदाद को लेकर गहरी कलि चल रही है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

- प्रसाद (भोग): मैंने भगवान को प्रसाद में लड्डू चढ़ाया।
- प्रासाद (भवन): राजा का प्रासाद बड़ा ही भव्य बना हुआ है।
- अभिराम (आकर्षक): फूलों से सजी वह बगिया अभिराम लग रही थी।
- अविराम (निरंतर) : राधेश्याम अविराम चलता रहा और पैदल ही स्कूल पहुँच गया।
- पवन (हवा) : आज बहुत ठंडी पवन चल रही है।
- पावन (पवित्र) : काशी हिंदुओं के लिए एक पावन स्थल है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग - परिवर्तन करो :



कवि, अधिकारिणी, बालिका, दादा, पति,

भगवान, भक्तिन

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग - परिवर्तन करो :

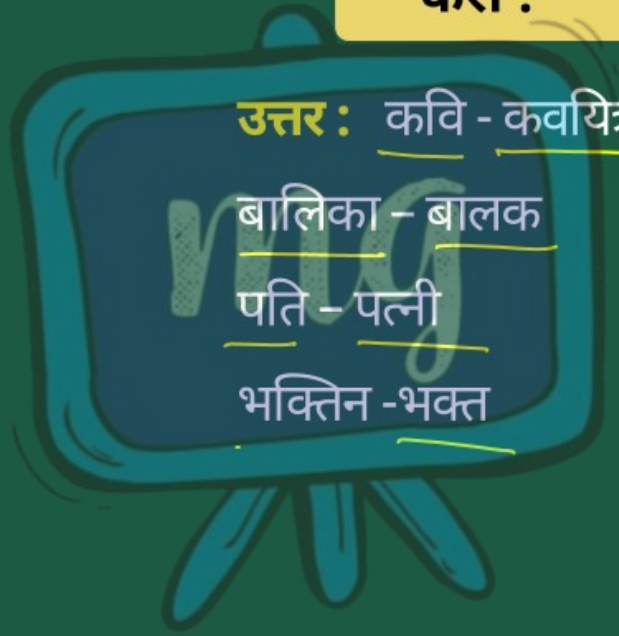

उत्तर : कवि - कवयित्री

बालिका – बालक

पति – पत्नी

भक्तिन -भक्त

अधिकारिणी - अधिकारी

दादा - दादी

भगवान-भगवती

4. विलोमार्थक शब्द लिखो :

उत्तर : पूर्ण-रिक्त

प्राचीन – नवीन

अपना - पराया

मिथ्या – सत्य

सुंदर – कुरूप

गुप्त – प्रकट

सजीव-निर्जीव

कोमल - कठोर

विरोध – समर्थन

कुसंग – सत्संग

अपमान – सम्मान

आनंद - शोक

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. निम्नलिखित शब्दों के वचन-परिवर्तन करो :

कविता, निधि, कवि, पौधा, कलम, औरत, सखी, बहू

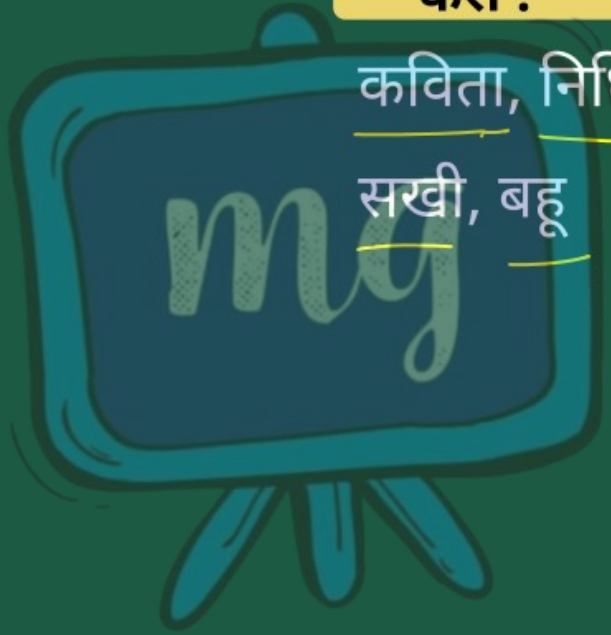

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

5. निम्नलिखित शब्दों के वचन-परिवर्तन करो :

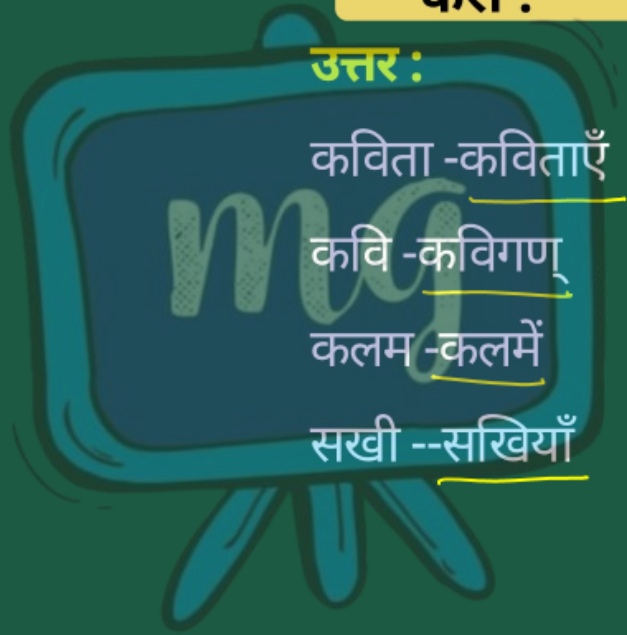

उत्तर :

कविता -कविताएँ

कवि -कविगण्

कलम -कलमें

सखी --सखियाँ

निधि-निधियाँ

पौधा-पौधे

औरत-औरतें

बहू-बहुएँ